ठाकुर रघुनाथ सिंह सम्याल (1885-1963) तहसील साम्बा, ज़िला जम्मू के एक जागीरदार परिवार में पैदा हुए। उन्होंने औपचारिक शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक ही प्राप्त की लेकिन स्वाध्याय तथा लोकसम्पर्क से उनका व्यक्तित्व निरन्तर निखरता चला गया। स्वभाव से मिलनसार, निर्भीक एवं स्पष्टवक्ता होने के कारण वे जनप्रिय थे। उन्होंने अपना कार्यजीवन एक मिडिल स्कूल में अध्यापन से शुरू किया। बाद में वे पटवारी नियुक्त हुए और विभिन्न स्थानों पर कार्य करते-करते तहसीलदार के पद तक जा पहुँचे।

श्री सम्याल का जीवन डोगरी समाज, साहित्य और संस्कृति के लिए समर्पित था। वे इन क्षेत्रों में कार्य करनेवाली संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उन्हें डोगरी, पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और फ़ारसी के प्रसिद्ध कवियों के असंख्य पद, श्लोक, छंद और शे'र कंठस्थ थे। साहित्य-सृजन, विशेषकर काव्य-रचना के क्षेत्र में, उन्होंने अपनी प्रौढ़ावस्था में क़दम रखा। *अरुणिमा* में उनकी प्रतिनिधि कविताएँ संकलित हैं। उन्होंने डोगरी, हिन्दी, पंजाबी, उर्दू और फ़ारसी में कविताएँ लिखने के अतिरिक्त गिलगित्ती (शिना) भाषा में एक उपयोगी व्याकरण की भी रचना की। सम्याल कृत *श्रीमद्भगवतगीता* का डोगरी अनुवाद अत्यन्त लोकप्रिय है। उनकी मृत्यु अठहत्तर वर्ष की आयु में कैंसर से हुई।

डोगरी की सुपरिचित लेखिका चम्पा शर्मा ने इस विनिबन्ध में कवि सम्याल के जीवन-संघर्ष तथा उनके रचनात्मक योगदान का समुचित आकलन किया है।

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

ठाकुर रघुनाथ सिंह सम्याल

चम्पा शर्मा

भारतीय साहित्य के निर्माता

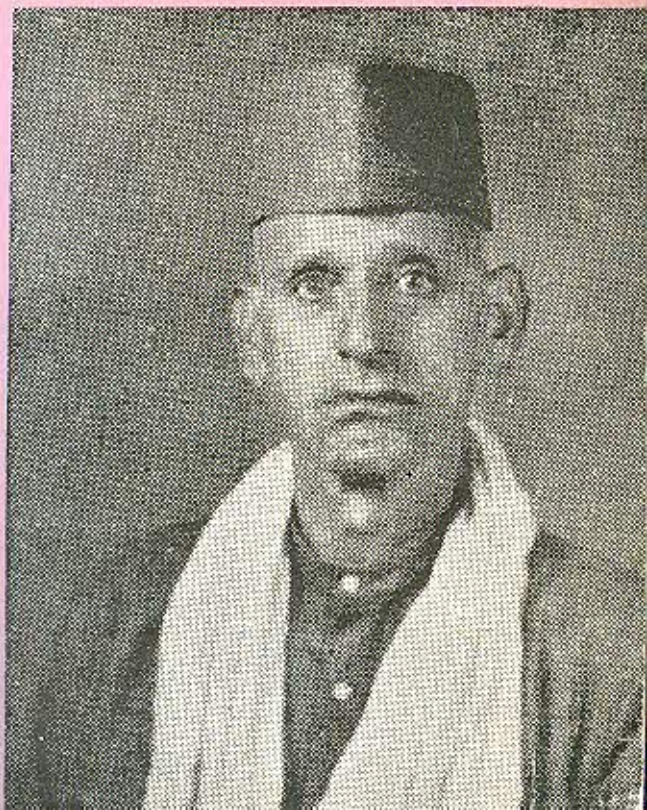

रघुनाथ सिंह सम्याल

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य है, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं । उनके नीचे बैठा है मुंशी जो व्याख्या का दस्तावेज़ लिख रहा है । भारत में लेखन-कला का यह संभवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख है ।

नागार्जुनकोण्डा, दूसरी सदी ई.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्य के निर्माता

रघुनाथ सिंह सम्याल

चम्पा शर्मा

The rates of the Sahitya Akademi publications have been increased w.e.f. 1 May 1992 vide Govt. of India letter No. JS(K)/91-545 dated 11 February 1992.

साहित्य अकादेमी

Raghunath Singh Samyal : A monograph in Hindi by Champa Sharma on the Modern Dogri poet. Sahitya Akademi, New Delhi (1991),

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 1991

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवन तारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, बम्बई 400 014

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

मुद्रक : वैलविश पब्लिशर्स,
पी. पी. 5, मौर्य एन्कलेव,
पीतमपुरा, दिल्ली 110 034

अनुक्रम

परिचय	7
समाज-सुधारक	21
काव्य-कला एवं सर्जना	34
गीता-अनुवादक के रूप में	43
शिना व्याकरण के रचयिता	53
उपसंहार	55
चयन	59
संदर्भ ग्रंथ-सूची	91

परिचय

ज़िला जम्मू की तहसील साम्बा के दक्षिण में स्थित एक बस्ती, जिसे कैहली मण्डी के नाम से जाना जाता है, रघुनाथ सिंह का जन्म स्थान है । प्राप्त जानकारी के अनुसार इस मण्डी को ठा. रघुनाथ सिंह के पुरखे भारतदेव ने बसाया था । भारतदेव के पिता मल्लदेव, जिन्हें 'मल्लखां' भी कहा जाता था, के पुरखे लखनपुर के मुग़ल शासकों के दरबार में काम करते थे । सम्भवतः मुगल प्रभाव के कारण ही मल्लदेव का नाम 'मल्लखां' रख दिया गया होगा । कहा जाता है कि उसके किसी क्रूर कर्म के कारण उसे किसी ब्राह्मण का शाप लगा था जिससे उसका वहाँ रहना कठिन हो गया था । जब वह खाना खाने लगता तो उसके भोजन एवं खाद्य पदार्थों में कीड़े ही कीड़े पैदा हो जाते थे । फलस्वरूप 'मल्लखां' लखनपुर से साम्बा आ पहुँचा । उसके चार बेटे—भारतदेव-जुबलदेव, ममोट खां, और दौलतदेव-हुए और चारों ने साम्बा नगर में एक-एक बस्ती बसाई जिसे 'मण्डी' कहा गया । कैहली मण्डी के संस्थापक भारतदेव की चौथी पीढ़ी में भागदेव हुए जो महाराजा रणजीतदेव (1735-1781 ई.) के समकालीन थे । भागदेव की भी चौथी पीढ़ी में रघुनाथ सिंह के दादा ठा. बूटा सिंह हुए । धीरे-धीरे मण्डियों की संख्या बाईस हो गई जिसमें इसी परिवार से सम्बन्धित राजपूत बसने लगे । इसकी पुष्टि के लिये ठोस ऐतिहासिक प्रमाणों की आवश्यकता है । बाईस संख्या की परिकल्पना जम्मू राज्य के साथ भी जुड़ी हुई मिलती है—एक कहावत है 'बाईस राज पहाड़ दे, बिच जम्मू राज-सरदार' अर्थात् डुग्गर कहलाने वाले पहाड़ी प्रदेश में छोटे-बड़े मिलाकर कुल बाईस राज्य थे जिसमें जम्मू राज्य उन सबका सरदार अर्थात् प्रमुख था ।

साम्बा नगर की कंढी के उल्लेखनीय नगरों—अखनूर, जम्मू, बसोहली,नूरपुर कांगड़ा एवं बिलासपुर—में अपनी महत्ता है ।

डोगरा लोगों की भूमि (डुग्गर) की भोगोलिक संरचना बड़ी विचित्र

है । इसके उत्तर की ओर बर्फ़ से ढके पीरपांचाल के ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं जो मानो भारतदेश की उत्तरी सीमा पर प्रहरी का उत्तरदायित्व निभा रहे हों । इसके नीचे के भू-भाग को अन्तर्गिरी एवं उसके भी नीचे के प्रदेश को बहिर्गिरी नाम से जाना जाता है । प्रत्येक भू-भाग अपनी-अपनी प्राकृतिक छटा एवं संपदा लिये हुए है । अन्तर्गिरी की पर्वतीय शृंखलाओं को 'धारा' कहा जाता है । यह अत्यन्त रमणीय भूभाग है, जहाँ पग-पग पर झर-झराते झरने, छल-छलाते नदी-नाले एवं मन्त्रमुग्ध कर देनेवाली मख़मली घास नवागन्तुकों को सहसा आकर्षित कर लेती है । पर इसके साथ ही तनिक नीचे बहिर्गिरी में कंढी की खुश्क पहाड़ियों वाला गर्म एवं निर्जल इलाका पड़ता है जहाँ का जनजीवन बड़ा दुश्वार रहा है । तदुपरान्त डुग्गर का वह इलाका पड़ता है जिसकी सीमा-रेखा पंजाब के मैदानी भाग से जा मिलती है ।

डुग्गर प्रदेश की कंढी नामक पट्टी का प्राचीन नाम बहिर्गिरी है। वैज्ञानिकों ने बताया है कि 'इस पट्टी की सीमा हिमालय से परे हिन्दुकुश एवं सुलेमान पर्वतों के साथ-साथ बलूचिस्तान के बीचों-बीच होती हुई अरब सागर तक चली गई है । इसका पूर्वी छोर नेपाल को छूता हुआ मिलता है । इसके कुछ हिस्से को भूगर्भशास्त्रियों ने शिवालिक भी कहा है । जम्मू प्रान्त में कंढी की पट्टी की लम्बाई लगभग ढाई सौ किलोमीटर पड़ती है । इसमें जल का नितान्त अभाव होने के कारण कृषि-कर्म केवल वर्षा के जल पर ही निर्भर है । इस भू-भाग में आज से पचास साठ वर्ष पूर्व जीवन-यापन बड़ा कठिन एवं विपदामय था । लोगों को दिनचर्या के लिये कोसों दूर चलकर कुओं से पानी लाना पड़ता था । कंढी प्रदेश में वर्षा ऋतु में यात्रा करना बड़ा कठिन एवं श्रमसाध्य कार्य होता था । स्थान-स्थान पर बरसाती नदी-नाले पथिकों के लिये संकट पैदा कर देते थे । इस प्रकार की जलवायु से यहाँ के लोगों के आचार-विचार पूर्णतया प्रभावित हैं । लोग परिश्रमी, स्वाभिमानी और कर्मशील हैं । किसी के आगे झुकने से मर जाना श्रेयस्कर समझते हैं। देखने में कंढी का भू-भाग भले ही उग्र एवं अनाकर्षक हो परन्तु यहाँ के युवक और युवतियाँ सुन्दर-गठीले देहधारी परिश्रमी

एवं कर्मठ हैं । कंढी के ही लोग मूल डोगरे माने गये हैं । ये स्वाभिमानी, इज्ज़तदार, वचनबद्ध, अनुशासनप्रिय एवं पुरातनपंथी हैं । इतिहास लेखक केदारनाथ शास्त्री के अनुसार कंढी के वीर सपूतों ने न केवल महाभारत युद्ध में ही अपितु चन्द्रगुप्त एवं राजा पोरस के श्रेष्ठतम सैनिकों की भी सहायता करके यूनानी योद्धाओं के छक्के छुड़ा दिये थे । इसके अतिरिक्त हर्षवर्धन की सामरिक विजय प्राप्ति में मुग़ल-काल में अफ़गानिस्तान एवं सीमावर्ती भागों में यहाँ के शूरवीरों ने बहादुरी के जौहर दिखाये थे ।

इसी धरती ने राष्ट्रहित के लिये हथेली पर सर रखकर घूमनेवाले मियां डीडो, महाराजा गुलाब सिंह जैसे शूरवीरों को जन्म दिया । इसी कठोर धरती के वीर सपूतों ने दोनों विश्वयुद्धों में बढ़-चढ़ कर जौहर दिखाये थे और संसार में डुग्गर प्रान्त का नाम ऊँचा किया था ।

योद्धाओं के साथ-साथ यहाँ के विद्धानों-विद्याव्यसनियों-कवियों, लेखकों एवं कलाकारों-चित्रकारों-मूर्तिकारो,भवन-निर्माताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में वरीयता प्राप्त की । ठा. रघुनाथ सिंह सम्याल भी इसी कंढी क्षेत्र के सपूत थे ।

साम्बा[1] नगर के दक्षिण में स्थित कैहली नाम की मण्डी के प्रतिष्ठित जागीरदार सम्याल परिवार में 21 माघ, 1942 विक्रमी तदनुसार 1885 ई. को ठा. रघुनाथ सिंह का जन्म हुआ । इनके पिता का नाम ठा. चतुर सिंह था जो शुपेइयां (कुलगाम तहसील, कश्मीर) के छोटे-से जागीरदार थे और दादा का नाम ठा. बूटा सिंह था । रघुनाथ सिंह जी चार भाई थे और चारों भाइयों—स्व. ठा. सन्त सिंह, स्व. बलदेव सिंह (रिटायर्ड आई.जी.पी.) एवं ठा. नसीब सिंह में रघुनाथ सिंह बड़े थे ।

ठाकुर रघुनाथ की माता श्रीमती निरजंन देवी अपने पिता के

1. साम्बा जम्मू नगर से 40 किलोमीटर के अन्तर पर जम्मू-पठानकोट राजमार्ग के बायीं ओर एक प्रतिष्ठित नगर है । एक जनश्रुति के अनुसार इस नगर को श्री कृष्ण एवं सत्यभामा के सुपुत्र शाम्ब ने बसाया था । कहा जाता है कि इस पुत्र को प्राप्त करने के लिये श्री कृष्ण एवं सत्यभामा को बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करना पड़ा था ।

सदृश ही पूजा-पाठ में आस्था एवं आत्म-विश्वास रखनेवाली धार्मिक विचारों की महिला थी ।

रघुनाथ सिंह के पिता ठाकुर चतरसिंह जी के घर बहुत दिनों तक कोई सन्तान न हुई जिसके कारण वे कैहली मण्डी के निकटवर्ती तालाब 'मगेआल' पर बनाए गए रघुनाथ जी के मन्दिर में नित्य भगवान के दर्शनार्थ एवं पूजा-प्रार्थना के लिए जाया करते थे । इस मन्दिर के पुजारी का नाम रघुनाथ दास 'वैरागी' था जो सन् 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम की बागी फ़ौज का एक सरगना था और वहाँ से भागकर इस मन्दिर में शरण लिये हुए था । एक दिन जब वह पुजारी ठा. चतर सिंह को भगवान का चरणामृत देने लगा तो गाँव की किसी वृद्धा स्त्री ने ठाकुर साहब को पुत्र जन्म की बधाई दी । ज्ञात होने पर पुजारी रघुनाथ दास 'वैरागी' ठाकुर चतर सिंह को सम्बोधित करते हुए कहने लगे, "ठाकुर जी, आप रघुनाथ जी के परम भक्त हैं । महाराज ने आप पर कृपा करके पुत्र रत्न दिया है । इसका नाम रघुनाथ सिंह रखना । इससे कुछ काल तक हमारा नाम आपके घर में टिका रहेगा । मैं आर्शीवाद देता हूँ कि लड़का दीर्घायु, बुद्धिमान, माता का आज्ञाकारी और रघुनाथ जी का भक्त होगा और आपके वंश का नाम उँचा करेगा ।" इसके पश्चात् ठा. चतरसिंह के तीन और पुत्र-संत सिंह, बलदेव सिंह और नसीब सिंह पैदा हुए ।

फलस्वरूप ठाकुर चतरसिंह ने बालक का नाम रघुनाथ सिंह रख दिया जो सत्य में योग्य एवं मेधावी व्यक्ति के रूप में ही प्रख्यात हुआ । सन् 1897 ई. में इनका विवाह तहसील शकरगढ़ (वर्तमान पाकिस्तान) के गाँव 'मुट्ठी' के नम्बरदार 'चिड़ा चौधरी' की कन्या 'ईशरी देवी' से हो गया । रघुनाथ सिंह की आयु तब ग्यारह-बारह (11-12) बरस की थी और वे छठी- सातवीं कक्षा में पढ़ते थे । चवालीस वर्ष के वैवाहिक जीवन को भोगकर उनकी पत्नी संवत् 1940 ई. में स्वर्ग सिधार गई । उसी वर्ष ठा. रघुनाथ सिंह सम्याल 34 बरस की नौकरी करने के उपरान्त सेवा-निवृत्त हुए थे । दिसंबर 1963 ई. में कैंसर के रोग से इनका जम्मू में 78 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया ।

ठा. साहब के तीन पुत्र ठा. जन्मेज सिंह, बद्री सिंह एवं ठा. गोबिन्द सिंह हुए । उनके बड़े दोनों पुत्रों का भी स्वर्गवास हो चुका है और तीसरे पुत्र ठा. गोबिन्द सिंह असिस्टैंट इनफर्मेशन आफ़िसर के पद से निवृत होकर एक स्थानीय प्राइवेट शिक्षा संस्थान में काम कर रहे हैं ।

ठाकुर रघुनाथ सिंह का बाल्यकाल 'कैहली' मण्डी साम्बा में ही व्यतीत हुआ । उन की औपचारिक शिक्षा साम्बा के एक स्कूल में वर्नाकुलर मिडल तक उर्दू के माध्यम से हुई क्योंकि उन दिनों हिन्दी का अस्तित्व वहाँ प्राय : नहीं के बराबर था । उनके पिता ठा. चतरसिंह के जीवन का अधिक समय अदालतों-कचहरियों में चल रहे मुकदमों में ही व्यतीत होता था जिसके परिणामस्वरूप रघुनाथसिंह के बचपन से ही भरे-पूरे परिवार वाले घर में आर्थिक संकट बना हुआ था । इसका दुष्प्रभाव रघुनाथ सिंह की शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ा । पिता की ज्येष्ठ सन्तान होने के नाते रघुनाथ सिंह को पढ़ाई आधी-अधूरी ही छोड़नी पड़ गई और नौकरी करनी पड़ी । सर्वप्रथम वे मिडल स्कूल कठूआ में सरकारी अध्यापक नियुक्त हुए । तत्पश्चात् एक मुंशी बन गए परन्तु शिक्षा के प्रति उन्हें बहुत लगाव था, जो आजीवन बना रहा । शिक्षा संस्थानों में वे भले ही मिडल कक्षा से आगे न पढ़ सके, पर इसकी कसक उन्हें सदा सालती रही । जिसे वे स्वयं न पा सके उस विद्या को पाने के लिए उन्होंने अपने छोटे भाइयों की हर प्रकार से सहायता की और उनके प्रेरणा-स्रोत बने रहे । ठा. साहब घर में सब भाइयों में बड़े थे, अत : छोटे भाइयों की पढ़ाई-लिखाई में अधिक रुचि लेते हुए उन्होंने उन्हें पिता के समान संरक्षण दिया और योग्य बनाया । फलत : वे सभी बड़े-बड़े पदाधिकारी बन कर सेवा निवृत्त हुए । स्वयं भी उन्होंने स्वाध्याय से उर्दू , फ़ारसी, पंजाबी एवं अनुवाद के माध्यम से संस्कृत ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया । हिन्दी के नीति-साहित्य एवं डोगरी के लोक-साहित्य, लोकगीत, लोककथाएँ, लोकोक्तियाँ, मुहावरा आदि के क्षेत्र में पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया जो उनकी रचनाओं के माध्यम से प्रकट हुआ है ।

राजकीय सेवाकाल में जम्मू-काश्मीर राज्य के सुदूरवर्ती गिलगित्त

के निवासकाल में किसी प्राचीन बौद्ध मन्दिर में दबे हुए लकड़ी के सात सन्दूकों में पड़ी हुई पाली-भाषा की अनेक पाण्डुलिपियों का उद्धार करने से ठाकुर साहब के विद्या-व्यसनी होने का परिचय मिलता है । यह बात विक्रमी संवत् 1988 अर्थात् 1931 ई. की है । यहीं पर सम्याल ने शिना[1] भाषा सीखी थी ।

विलक्षण व्यक्तित्व :

ठाकुर साहब लड़कपन में कसरत खूब करते थे । कबड्डी, दौड़ लगाना और वेट-लिफ्टिंग उनकी प्रिय खेलें थीं । सैर बहुत करते थे । घुड़सवारी में भी प्रवीण थे । ठा. रघुनाथ सिंह एक विलक्षण व्यक्तित्व के स्वामी थे और साढ़े पाँच फुट से भी कुछ ऊँची क़द-काठी के छरहरे और पुष्ट शरीर के व्यक्ति थे । उनका सदा मुस्कराता हुआ चेहरा लंबूतरा था । कंढी-निवासियों का परिचय करानेवाली उनकी तीखी और लम्बी नाक थी और आँखें चमकती हुई छोटी, पर बिल्लौरी थीं । उनके वंशजों के कथनानुसार ठा. साहब बंद गले का लम्बा डोगरा कुर्ता, तंग पाजामा और नोकदार पगड़ी पहनते थे । उनके गले में एक दुपट्टा होता था एवं पाँवों में लाख के रंग का जूता पहनते थे । राजनीति में प्रवेश कर लेने के उपरान्त उनकी पगड़ी का स्थान लंबूतरी काली टोपी ने ले लिया । वह शेरवानी पहनने लगे और गले में मफ़लर रखने लग पड़े ।

कसरत, दौड़, कबड्डी आदि से गठीला उनका शरीर एक डोगरी लोकगीत की निम्न पंक्तियों का स्मरण कराता है, जिसमें साम्बा के युवकों को जम्मू के नौजवानों के समान सुन्दर और सुडौल बताया गया है :-

"साम्बा निं साम्बा आक्खिये गोरिये,
साम्बा पद्धरा मदान ।
साम्बे दे गभरू बांकड़े,
जियां जम्मू दे जुआन ।"

1. शिना चीनी भाषा का शब्द है और इसी नाम की जाति गिलगित की पुरानी कौमों में से है । इस कौम के नाम पर ही यहाँ की बोली का नाम भी 'शिना' प्रसिद्ध हो गया ।

रघुनाथ सिंह का व्यक्तित्व विरोधाभासों का सम्मिश्रण है । जहाँ एक ओर वे स्वभाव से हँसमुख व्यक्ति थे और हँसी-मज़ाक करते थे, वहाँ खुलकर क्रोध भी प्रकट किया करते थे, पर थे पूर्णतया निश्छल व्यक्ति एवं स्पष्ट-वक्ता । ये गुण उनको उनकी जन्मभूमि कढी से प्राप्त हुए थे । उनकी एक विशेषता यह थी कि वे बड़ी-से-बड़ी विपत्ति में भी विचलित नहीं होते थे । स्थिति का सामना हँस कर करते थे । उनका स्वभाव से तेज़ होना किसी को बुरा नहीं लगता था क्योंकि उसमें लोगों का ही हित निहित होता था ।

ठाकुर साहब में स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ था । वे हठीले थे । आदर्शों एवं उद्देश्यों की समानता होते हुए भी किसी अन्य की नेतागिरी के नीचे आना नहीं चाहते थे ।

ठा. साहब जागीरदारी व्यवस्था एवं उसकी सभ्यता में पूर्ण आस्था रखते थे जिसकी झलक उनके कार्य-व्यवहार से मिलती है । वे राज-भक्त व्यक्ति थे और उनके राजभक्त होने का प्रमाण उन्हीं की निम्न पंक्तियों से होता है :-

"गुलाबसिंह इक शेर डोगरा, बिरली जमदी माई,
दिक्ख सयासत, बनी रियासत, हिकमत और बनाई ।
रणबीरसिंह मरजादा बद्धी, सब तदबीर चलाई ।
धरमराज परतापसिंहै गी, आखै सब लुकाई ।
हरिसिंहै स्वराज बनाया दिदे लोक बधाई ।
रघुनाथ सिंह जो नेकी भुल्ले, होदा जन्म कसाई ।"

अर्थात् गुलाब सिंह डोगरा धरती का सिंह था जिसको जन्म देने का सौभाग्य किसी-किसी बड़भागिनी माँ को ही प्राप्त है । उनका राजनीतिविषयक ज्ञान दर्शनीय है जिसके बलबूते पर जम्मू-काश्मीर की अलग रियासत अस्तित्व में आई और इसका गौरव बढ़ा । तदुपरान्त महाराजा रणबीर सिंह ने मर्यादाओं को क़ायम किया और राज्य की भाग्य-रेखा बनाई । उनके परवर्ती महाराजा प्रतापसिंह को सभी लोक 'धर्मराज' पुकारते थे । महाराज हरिसिंह ने स्वराज्य की स्थपना की जिस पर